लेख-1

महाशिवरात्रि - धार्मिक एकता एवं सद्भावना का त्यौहार

भारत एक बहुआयामी सांस्कृतिक विरासत का संवाहक अद्वितीय देश है। प्रत्येक धर्मों में मनाये जाने वाले त्योहार, धार्मिक परम्पराएं, रीति-रिवाज एवं जयन्तियां, मनुष्य को किसी न किसी रूप से आध्यात्मिक सत्ता से जोड़ती हैं। शायद इसी कारण से इस अति भौतिकवादी संस्कृति और भाग्यविधाता विज्ञान के युग में भी ईश्वर की सत्ता विविध रूपों में स्वीकार्य है। परन्तु कालान्तर में जब लोगों में श्रद्धा एवं स्नेह का क्षरण होने लगता है तो इनमें निहित आध्यात्मिक सत्य का स्थान कर्मकाण्ड एवं अनौपचारिकता ले लेती हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज पर्व औपचारिकता को निभाने के लिए मनाएं जाते हैं। परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में इन त्योहारों के पीछे छिपे आध्यात्मिक सत्य का उद्घाटन करने की आवश्यकता है जिससे इस संसार में व्याप्त अज्ञानता और तमोप्रधानता को दूर करके मनुष्य-सभ्यता को यथार्थ मार्ग दिखाया जा सके।

शिवलिंग - परमात्मा की यादगार

विश्व के प्राय: सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं कि परमात्मा एक है। परन्तु सबसे आश्चर्यजनक एवं विरोधाभासी तथ्य परमात्मा के सम्बन्ध में एक ही मुंह से अनेक बातें हैं। परमात्मा के सम्बन्ध में असत्य, भ्रामक और एकांगी विचारों के कारण ही समाज में हिंसा, घृणा और वितृष्णा का जन्म हुआ। यह संसार भ्रम सागर बन गया। परन्तु इसके साथ ही सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है। वह यह कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है: इस सम्बन्ध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के सम्बन्ध में नहीं। भारत और भारत के बाहर देवालयों में स्थापित शिवलिंग परमात्मा के ज्योति स्वरूप की यादगार हैं। शिवलिंग का आकार कोई मानवीय शरीर नहीं होता है। भाषिक विवेचन के अनुसार शिव का अर्थ 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ 'चिन्ह' होता है। अत: शिवलिंग किसी एक विशेष धर्म के लिए आराध्य-प्रतीक नहीं, बल्कि परमात्मा तो सर्व मनुष्यात्माओं का चाहे वह किसी भी धर्म, वर्ण अथवा कर्म से सम्बन्धित हो, सभी का आराध्य है। परमात्मा के सम्बन्ध में विभिन्न धर्मों में प्रचलित 'नूर', 'डिवाइन लाइट', 'ओंकार' और 'ज्योर्तिस्वरूप' भाषा के स्तर पर ही भिन्न हैं। भाव अर्थात् स्वरूप के स्तर पर नहीं। अत: शिवलिंग अर्थात् सर्वात्माओं के 'कल्याणकारी ज्योर्तिबिन्दु स्वरूप परमात्मा' शिव की प्रतिमा।

शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य:

प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुन मास की अमावस्या के एक दिन पूर्व बड़ी ही आस्था के साथ मनाया जाता है। इस दिन शिवलिंग की विशेष आराधना की जाती है एवं इस पर बेल-पत्र, धतूरा, जल, बेर इत्यादि फल-फूल चढ़ाये जाते हैं। भक्त जन अखाद्य पदार्थ जैसे भांग एवं गाजा का सेवन प्रसाद के रूप में करते हैं। इस दिन 'शिव की बारात' भी निकाली जाती है जिसमें सभी प्रकार के व्यक्ति और प्राणी सम्मिलित होते हैं। महाशिवरात्रि के अवसर पर व्रत करने तथा रात्रि में जागरण करके आराधना करने की भी परम्परा भक्तजनों में प्रचलित है।

परन्तु शिव कौन हैं? शिव के लिए लिंग या 'ज्योतिर्लिंग' शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है? शिव के साथ रात्रि का क्या सम्बन्ध है? कृष्ण के साथ अष्टमी और राम के साथ नवमी तिथि जुड़ी हुई है परन्तु शिव के साथ रात्रि ही जुड़ी

है, कोई तिथि क्यों नहीं जुड़ी है? शिव के साथ शालिग्राम कौन हैं? अन्य सभी देवताओं पर अच्छे और स्वादिष्ट प्रसाद चढ़ाये जाते हैं परन्तु शिव पर अक का फूल और धतूरा ही क्यों चढ़ाया जाता है। क्योंकि शिव की मूर्ति शरीर रहित है परन्तु उनका वाहन नन्दी शरीरधारी क्यों है? इत्यादि शिवरात्रि से जुड़े प्रश्नों पर विवेकयुक्त और यथार्थ ढंग से वर्तमान परिस्थितियों में चिन्तन करने की आवश्यकता है। तभी महाशिवरात्रि के पर्व को यथार्थ ढंग से मनाकर संसार को सही दिशा दी जा सकती है एवं मानव मन में व्याप्त अज्ञानता और तमोगुणी आसुरी संस्कारों का शमन किया जा सकता है।

'महाशिवरात्रि' के सम्बन्ध में सबसे अनोखी बात यह है कि इसका सम्बन्ध निराकार, अशरीरी परमात्मा से है। जबकि अन्य सभी त्योहारों, पर्वों अथवा जयन्तियों का देवताओं, पौराणिक महापुरुषों के जीवन से सम्बन्ध होता है। अत: शिवरात्रि परमात्मा शिव के इस धरा पर अवतरण की यादगार है। परमात्मा शिव, सामान्य मनुष्यों की तरह शरीरधारी नहीं हैं और जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त है। गीता में भगवान ने इस सम्बन्ध में कहा है - ''जो मुझे मनुष्यों की भांति जन्म लेने और मरने वाला समझते हैं वे मूढ़मति हैं'' (अध्याय 6, श्लोक 24, 25)। पुन: वे कहते हैं - ''मेरे दिव्य जन्म के रहस्य को न महर्षि, न देवता जानते हैं'' (अध्याय 10, श्लोक 2)। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा प्रकृति के तत्वों के अधीन कोई सामान्य मनुष्यों की तरह शरीरधारी नहीं हो सकता है। प्राय: सभी धर्मों के लोग निर्विवाद रूप से परमात्मा को 'ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप' और 'अशरीरी तथा जन्म-मरण रहित' तो स्वीकार करते ही हैं। अत: शिव का अन्य भाषान्तर 'गॉड', खुदा 'ओंकार' इत्यादि है और 'शिव रात्रि' परमात्मा के दिव्य-अवतरण दिवस की यादगार है।

शिव के साथ रात्रि का सम्बन्ध: यह तो सभी धर्मानुयाई मानते ही हैं कि परमात्मा का अवतरण पापाचार, अधर्म और अज्ञानता का विनाश करके सत्य धर्म की स्थापना करने के महान कर्म के निमित्त ही होता है। परमात्मा के अवतरण के काल और कर्म के सम्बन्ध में गीता में कहा गया है:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजहम्यहम् ।। अध्याय 4, श्लोक-7)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (अध्याय 4, श्लोक-8)

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वत:।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोडर्जुन।। (अध्याय-4, श्लोक-9)

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा का दिव्य-अलौकिक जन्म, धर्म ग्लानि के समय अधर्म के विनाश के लिए होता है। यदि वर्तमान सांसारिक परिदृश्य का अवलोकन करें तो चारों ओर व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबा समाज अधर्म और धर्मग्लानि का ही समय है। जिस समाज में भ्रष्टाचार। जीवन में शिष्टाचार बन गया हो, उसे धर्म ग्लानि का काल नहीं तो और क्या सम्बोधित कर सकते हैं? तो शिव के साथ रात्रि का जो सम्बन्ध है, वह परमात्मा शिव के घोर पापाचार और वर्तमान तमोप्रधान कलियुग में अवतरण की यादगार है। वैसे भी भारतीय दर्शन में 'रात्रि' शब्द 'अज्ञानता' और 'विनाशकाल' का सूचक है। मनु ने कहा है - 'आसीदिदं तमोभूतम् प्रज्ञानम् लक्षणम्'। अत: फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या त्रयोदशी रात्रि को मनाई जाने वाली

शिवरात्रि महाविनाश से थोड़े समय पूर्व परमात्मा के दिव्य अवतरण की यादगार है। ऐसे ही समय में जब ईश्वरीय ज्ञान प्राय:लोप हो जाता है, तब ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा शिव अधर्म का विनाश करके सत्य धर्म की स्थापना करने के लिए अवतरित होते हैं।

शिवरात्रि का रहस्य

शिवरात्रि के दिन भक्तगण शिवलिंग पर धतूरा, बेर, बेलपत्र इत्यादि चढ़ाते हैं, रात्रि जागरण करते हैं एवं अन्न का व्रत रखते हैं। परन्तु वास्तव में परमात्मा शिव पर यथार्थ रूप से क्या चढ़ाना चाहिए और किस प्रकार से व्रत का पालन करना चाहिए, इसके आध्यात्मिक रहस्य को समझने की आवश्यकता है। तभी स्वयं का और सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव है। धतूरा-विकार का, बेर - नफरत-घृणा का और बेल-पत्र-बुराइयों का प्रतीक है। अत: हमें परमात्मा शिव पर विकारों, विषय-वासना एवं बुरी आदतों को चढ़ाना चाहिए अर्थात् त्याग करना चाहिए। वास्तव में शिवरात्रि वर्तमान कलियुग के अन्त और सतयुग के प्रारम्भ में बीच के समय 'संगमयुग' का नाम है, जब स्वयं निराकार परमपिता शिव, साकार मानव-तन प्रजापिता ब्रह्मा (पौराणिक नाम नन्दीगण) के तन में अवतरित होकर मनुष्यात्माओं से विकारों और बुराइयों का, ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर त्याग कराते हैं। अत: शिवरात्रि पर विकारों एवं बुराइयों से व्रत रखें। रात्रि जागरण का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव के वर्तमान समय के अवतरण के काल में हम अपनी आत्मा की ज्योति को जगायें, अज्ञान-निद्रा में सो न जायें। शिव की बारात का आध्यात्मिक रहस्य यह है परमात्मा शिव मनुष्य आत्माओं को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त, सृष्टि चक्र, कर्मों की यथार्थ समझ एवं गहन गति का ज्ञान देकर अपने निवास स्थान - परमधाम ले जाते हैं। वास्तव में बहुरूपी बाराती मनुष्य के विकृत सूक्ष्म संस्कारों का शास्त्रीय रूपक चित्रण है। अत: शिवरात्रि के महात्म्य और आध्यात्मिक रहस्य को यथार्थ रीति से समझकर मनाने से ही सर्व मनुष्यात्माओं और संसार का कल्याण हो सकता है।

सर्व मनुष्यात्माओं प्रति ईश्वरीय सन्देश:

वर्तमान तमोप्रधान धर्म ग्लानि के समय में निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव को इस धरा पर अवतरित हुए 67 वर्ष हो चुके हैं। परमात्मा शिव अनेक आध्यात्मिक रहस्यों का उद्घाटन करके सत्य धर्म की स्थापना का दिव्य-कर्म कर रहे हैं। एक ओर इस पुरानी-पतित दुनिया के विनाश के लिए महाप्रलयंकारी आणविक अस्त्रों का जखीरा तैयार हो चुका है तो दूसरी ओर प्राकृतिक शक्तियां भी उग्र स्वरूप प्रदर्शित कर रही हैं जिसके फलस्वरूप जीवनरक्षक परत-ओजोन का क्षरण, तापक्रम में वृद्धि, मौसम में परिवर्तन, भूकम्प इत्यादि प्राकृतिक आपदाएं अस्तित्व में आ रही हैं। ये पुरानी दुनिया के अन्त का स्पष्ट संकेत हैं, महज प्रकृति के अन्दर घटित होने वाली सामान्य घटनाएं नहीं हैं। अत: सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमन्त्रण है कि वर्तमान संगमयुग में निराकार परमात्मा शिव तथा स्वयं को यथार्थ रीति से पहचान कर निकट भविष्य में आने वाली नई सतयुगी दैवी-संस्कृति प्रधान दुनिया के अपने जन्मसिद्ध ईश्वरीय वर्से को प्राप्त करें। महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को समझकर अपने तमोगुणी स्वभाव और संस्कारों का त्याग करके, स्वयं के जीवन में तथा इस सृष्टि में 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के मंगलमय तत्व का संचार करें।

ओम् शान्ति।

लेख-2

ऐसे मनायें शिवरात्रि का महापर्व

देवाधिदेव महादेव शिव की महिमा अनन्त है उनके कर्म दिव्य हैं और जन्म अलौकिक है। इसी दिव्यता और अलौकिकता के कारण ही उनसे जुड़े प्रसंग रहस्यमय बनकर किमवदन्तियों में बदल गये हैं। जैसे कहा जाता है कि शिव को अखाद्य पदार्थ जैसे भांग-धतूरा इत्यादि प्रिय हैं, भूत-प्रेत इत्यादि उनके 'गण' हैं, उनके गले में सर्प की माला सुशोभित है और वे हिमाच्छादित हिमालय में निवास करते हैं...। इसी प्रकार के अन्य अनेक रोचक और रहस्यमय पौराणिक प्रसंग उनके जीवन से जुड़े हुए हैं। इसी पौराणिक रहस्यमयता के कारण ही शिवरात्रि का महात्म्य कर्मकाण्ड और वर्ष में केवल एक बार रस्म अदायगी के तौर पर जुड़कर रह गया है। आवश्यकता है शिवरात्रि से जुड़े हुए आध्यात्मिक रहस्य के सत्य उद्घाटन की जिससे सच्ची शिवरात्रि को मनाकर अपने जीवन में 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' को समाहित करके इसे सफल बना सकें।

शिव की पूजा 'शिव लिंग' रूपी प्रस्तर के रूप में की जाती है। शिवलिंग को 'ज्योतिर्लिंग' भी कहा जाता है। द्वादश ज्योतिर्लिंग' पूरे भारत में विख्यात हैं जिनका दर्शन और अर्चन करना प्रत्येक धर्मपरायण भारतीय की पुण्य आस होती है। ज्योतिर्लिंग, परमपिता परमात्मा शिव के अव्यक्त और अभौतिक स्वरूप की यादगार है। यह शिव के नई दुनिया की सृजनात्मक और अन्तर्निहित सृजनात्मक शक्ति का परिचायक है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से शिव 'कल्याणकारी स्वरूप' का परिचायक है तथा लिंग 'चिन्ह अथवा प्रतिमा' को व्यक्त करता है। इस प्रकार शिव लिंग अर्थात् कल्याणकारी शिव परमात्मा की प्रतिमा। वैसे भी ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव के ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप को ही व्यक्त करता है। प्राय: सभी धर्मों में परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को 'नूर', 'डिवाइन लाइट', 'ओंकार' ही माना गया है। अत: शिव सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं।

सच्ची शिवरात्रि: भारतीय धार्मिक परम्परा के अनुसार शिवरात्रि का पर्व प्रतिवर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष के अमावस्या के एक दिन पूर्व मनाया जाता है। इसके बाद शुक्ल पक्ष का आरम्भ होता है तथा कुछ ही दिनों बाद नव संवत् अर्थात् नये वर्ष का प्रारम्भ होता है। शिव के साथ जुड़ी हुई 'रात्रि' का सामान्य अर्थ उस रात्रि से नहीं है, जो पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर कक्षीय चक्रण के कारण आती है। जिस प्रकार 'शिव' शब्द का आध्यात्मिक अर्थ 'कल्याणकारी' होता है, उसी प्रकार दार्शनिक दृष्टिकोण से रात्रि शब्द 'अज्ञानता, पापाचार और बुराइयों' का प्रतीक है। अत: शिवरात्रि अर्थात् घोर तमोप्रधान धर्म ग्लानि के समय लोक कल्याणार्थ परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण का यादगार पर्व। जब इस संसार में धर्म का स्थान कर्मकाण्ड, कर्म का स्थान आडम्बर ले लेता है। संसार में चारों ओर पापाचार, अनाचार और भ्रष्टाचार का ही पाप लोगों के सिर पर चढ़कर बोलने लगता है तो वही काल परमात्मा शिव के अवतरण का समय होता है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी आत्माओं के अज्ञान - अंधकार अथवा आसुरी गुणों की पराकाष्ठा का प्रतीक है इसके पश्चात् शुक्ल पक्ष परमात्मा शिव द्वारा 'ईश्वरीय ज्ञान' और योग द्वारा पवित्र और सुख-शान्ति सम्पन्न नई सृष्टि के प्रारम्भ का प्रतीक है।

वर्तमान सृष्टि के कालखण्ड में तमोप्रधानता और अज्ञानता अपनी चरम सीमा के अन्तिम छोर पर पहुँच चुकी है। चारों ओर पाँच विकारों का हाहाकार एवं घमासान मचा हुआ है। धर्म सत्ता, कर्त्तव्य-विमुख हो चुकी है, राज सत्ता, पथ

भ्रष्ट और कर्म-भ्रष्ट हो चुकी है एवं विज्ञान सत्ता, विनाश की ओर अहर्निश कदम बढ़ा चुकी है। चारों ओर अंधकार ही अंधकार है। दिन के प्रकाश में भी बुराइयों और अज्ञानता रूपी रात्रि का चारों ओर साम्राज्य छाया हुआ है। यही घोर अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा शिव के अवतरण का समय है। वर्तमान समय में परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर अज्ञानता के विनाश और नई सतयुगी दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्म कर रहे हैं।

बुराइयों, कुसंस्कारों एवं आसुरी प्रवृत्तियों को शिव पर चढ़ायें:

शिवरात्रि के अवसर पर शिवलिंग पर बेल-पत्र, बेर, धतूरा इत्यादि खाद्य-अखाद्य पदार्थ चढ़ाये जाने का रस्म-रिवाज प्रचलित है। भक्तजन इस दिन शिव मन्दिरों में विशेष रूप से रात्रि जागरण करके शिव की अराधना करते हैं एवं अन्न-जल का व्रत रखते हैं। परन्तु परमात्मा शिव हम मनुष्यात्माओं पर केवल उपर्युक्त भौतिक वस्तुओं को चढ़ाने मात्र से ही प्रसन्न नहीं हो सकते। क्योंकि हजारों वर्षों से शिवरात्रि के दिन व्रत, उपवास और पूजन-अर्पण का क्रम तो होता ही आया है परन्तु फिर भी आज तक शिव प्रसन्न ही नहीं हुए?

इसका आध्यात्मिक यथार्थ रहस्य यह है कि वर्तमान संगमयुग पर मनुष्यात्माओं को पावन बनाने के लिए परमात्मा शिव काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, कुसंस्कार एवं आसुरी प्रवृत्तियों का दान ले रहे हैं। इन सूक्ष्म मनोविकारों को मानसिक रूप से परमात्मा शिव के सम्मुख अर्पण करके जीवन में पवित्रता और आत्मा को बुराइयों से बचाने का महाव्रत लेना है। तभी हमारे जीवन में सुख -शान्ति एवं दिव्य-गुणों की सच्ची धारणा हो सकती है एवं परमात्मा शिव से हम अपने पुरुषार्थ अनुसार जन्म-जन्मान्तर के लिए ईश्वरीय राज-भाग्य का अधिकार प्राप्त कर सकते हैं।

ईश्वरीय सन्देश: इस सृष्टि पर निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव को अवतरित हुए 67 वर्ष हो चुके हैं। सृष्टि चक्र के ड्रामानुसार वे साकार मनुष्य प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमन्त्रण है कि परमात्मा शिव द्वारा दिये जा रहे इस ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण कर जन्म-जन्मान्तर के लिए श्रेष्ठ राज-भाग्य को प्राप्त करें।

ओम् शान्ति।

लेख-3

शिवरात्रि अर्थात् अज्ञानता के विनाश का पर्व

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्राय: दिन के समय जन्मदिन के रूप में मनाये जाते हैं परन्तु एक परमात्मा शिव की जयंती ही ऐसी है जिसे जन्मदिन न कहकर 'शिवरात्रि' के नाम से पुकारा जाता है, इसका कारण यह है कि निराकार परमात्मा शिव जन्म-मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह कोई लौकिक या शारीरिक जन्म नहीं होता जो कि उनका जन्म-दिन मनाया जाये। कल्याणकारी विश्व पिता 'शिव तो अलौकिक अथवा दिव्य-जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती संज्ञा वाचक नहीं, बल्कि कर्त्तव्यवाचक रूप से ही मनाई जाती है। उनका दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोये हुए मनुष्य को जगाने के लिये ही होता है। परमात्मा शिव द्वारा इस 'अज्ञान रूपी रात्रि' का अंत किये जाने के आध्यात्मिक रहस्य से ही शिव जयंती को 'शिवरात्रि' कहा जाता है।

शिवरात्रि: शिव के दिव्य कर्मों का यादगार

अब प्रश्न उठता है कि परमात्मा शिव जो मनुष्य के चैतन्य बीज रूप हैं तथा जन्म-मरण एवं कर्म बंधनों से सदा मुक्त हैं, जो स्वयं सबके माता-पिता हैं, वे कैसे इस सृष्टि पर दिव्य ज्ञान लेकर अवतरित होते हैं? इसका उत्तर स्वयं भगवान ने दिया है जिसका उल्लेख श्रीमद्भागवत गीता से मिलता है। परमात्मा शिव किसी माता के गर्भ से अपना निजी शरीर धारण करके साधारण मनुष्यों की तरह लौकिक जन्म नहीं लेते हैं। वे तो प्रकृति को अधीन करके अर्थात् 'परमात्मा' परकाया प्रवेश करके दिव्य-जन्म लेते हैं जिसको ही 'अवतार' कहा जाता है। परमात्मा शिव का अवतरण कल्पांत अथवा कलियुग के अन्त के घोर अज्ञान-अंधकार अथवा अति धर्मग्लानि के समय एक वृद्ध तन वाले साधारण मानवी तन में होता है। जिसका नाम उस दिव्य प्रवेशता के पश्चात् 'प्रजापिता ब्रह्मा' पड़ता है। परमात्मा शिव उस ब्रह्मा के मुख द्वारा ही बहुत काल से प्राय: लुप्त हो चुके ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। जिसे वह व्यक्ति (ब्रह्मा) स्वयं भी धारण करके अपने जीवन को कमलपुष्प के समान पवित्र बनाकर नर से श्री नारायण (सतयुगी विश्व महाराजकुमार श्रीकृष्ण) पद की प्राप्ति करता है। इस प्रकार कलियुग के अंत वाले ब्रह्मा ही तो सतयुग की आदि में विष्णु अर्थात् (श्रीकृष्ण) बनते हैं। जो सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का पूरा चक्कर लगाकर अगले कल्प के अंत में पुन: ब्रह्मा बन जाते हैं। इसलिए 'ब्रह्मा सो विष्णु' 'विष्णु सो ब्रह्मा' की उक्ति प्रसिद्ध है। सतयुग और त्रेता रूपी सुखधाम अथवा स्वर्ग को ब्रह्मा का दिन और द्वापर तथा कलियुग रूपी दु:खधाम अथवा नर्क को 'ब्रह्मा की रात्रि' इसी रहस्य के कारण कहा जाता है। यही ब्रह्मा भगवान शिव के भाग्यशाली शरीर रूपी रथ होने के कारण 'भगीरथ' अथवा शिव के 'नंदीगण' इत्यादि नामों में भी प्रसिद्ध है।

शिवरात्रि और नवरात्रि

नवरात्रि में यज्ञ रचकर दुर्गा, अम्बा इत्यादि शक्तियों अथवा 108 कन्याओं का पूजन होता है भारत में 108 शालिग्रामों तथा 108 दानों की रूद्राक्ष माला और वैजयन्ती माला का भी पूजन स्मरण चला आता है। ये 108 शालिग्राम तथा माला के मणके उन पवित्र आत्माओं अथवा शिव शक्तियों के प्रतीक हैं जिन्हें परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल से ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर मुख वंशावली चैतन्य ज्ञान गंगायें बनाकर भारत को पतित से पावन बनाया था, ज्ञान सागर, सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव से ही ब्रह्माकुमारों ने ज्ञान और योग की शक्ति धारण की थी।

माला का युगल दाना (मेरु) ब्रह्मा एवं सरस्वती का द्योतक है और इसका फूल निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव का प्रतीक है। ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के बल से शिव शक्तियों ने विकारों अर्थात् आसुरी संस्कारों पर विजय प्राप्त की थी इसलिए उन्हें 'असुर निकन्दनी' भी कहा जाता है। ज्ञान सागर परमात्मा शिव से अमृत कलश प्राप्त करके

अज्ञानता में पड़े मृत प्राय: नर-नारियों को अमर पद दिलाने की ईश्वरीय सेवा करने के कारण ही शिव शक्तियों का पूजन होता है और उन्हें 'वंदे मातरम्' अथवा 'भारतमाता शक्ति अवतार' कहकर इनकी वंदना की जाती है। परमात्मा शिव तथा प्रजापिता ब्रह्मा के साथ सहयोगी होकर इस पतित सृष्टि का पावन सृष्टि अम्बा, सरस्वती, दुर्गा, गंगा, यमुना इत्यादि नामों से विख्यात होती हैं। वे चैतन्य ज्ञान गंगायें ही भारत के जन-मन को शिवज्ञान द्वारा पालन करती हैं। महाकालेश्वर शिव ब्रह्मा द्वारा स्थापना पूरी होते ही महादेव शंकर द्वारा कलियुगी सृष्टि का महाविनाश कर सभी मनुष्यात्माओं को शरीर मुक्त करके शिवलोक (परलोक) ले जाते हैं। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त का स्मरणोत्सव होने के हेतु शिवरात्रि भारत का सबसे बड़ा त्योहार है। अर्थात् कलियुग को स्वर्ग बनाने का कार्य करने के कारण ही इन शिवशक्तियों के यादगार नवरात्रि का शिवरात्रि से घनिष्ठ सम्बन्ध है। वर्तमान समय परमात्मा शिव, प्रजापिता ब्रह्मा तथा शिव शक्तियों के दिव्य एवं अलौकिक कर्त्तव्य की पुनर्रावृत्ति हो रही है। इसमें सहयोगी बनकर कोई भी मनुष्यात्मा आने वाले सतयुगी दैवी स्वराज्य में अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार भविष्य 21 जन्मों (2,500 वर्ष) के लिए प्राप्त कर सकती है।

शिव का रात्रि से सम्बन्ध

शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष का अन्तिम मास होता है। और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन को शिवरात्रि के घोर अज्ञानांधकार रूपी रात्रि के समय मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पान्त के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के विनाश से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर तमोगुण और पापाचार का विनाश करके दु:ख और अशान्ति को हरा था।

शिवरात्रि सबसे बड़ा पर्व

ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संधिकाल अथवा संगम के समय ब्रह्मा के तन अथवा भगीरथ अर्थात् भाग्यशाली शरीर रूपी रथ में प्रवेश होकर उसके मुख द्वारा ज्ञान-गंगा बहाते हैं। वास्तव में, यही सच्चा गीता-ज्ञान है। इसे जो शरीरधारी देवता श्री कृष्ण ने नहीं बल्कि गोपेश्वर अव्यक्तमूर्त परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा सुनाया था। ब्रह्मा के द्वारा जो भारत माता और कन्याएं सुधाकर परमात्मा से ज्ञान सुधा (अमृत) का पान करती हैं, वही शिव शक्तियां हैं।

ईश्वरीय सन्देश

अब परमात्मा शिव आदेश देते हैं कि 'मेरे प्रिय भक्तों आप जन्म जन्मान्तर से मेरे यथार्थ स्वरूप को जान मेरी जड़ प्रतिमा की पूजा, जागरण तथा उपवास करके शिवरात्रि मनाते आए हो। अब अपने इस अन्तिम जन्म में महाविनाश से पूर्व ये ज्ञान द्वारा अज्ञान की कुम्भकरणी निद्रा से जागरण कर और साथ उपवास अर्थात् उप + वास अर्थात् यानी परमात्मा के समीप रहो। इस ज्ञान एवं योग की शिवरात्रि को धारण करके महाविनाश तथा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करो। यही सच्चा महाव्रत अथवा शिवरात्रि है। संक्षेप में शिव का मंत्र अथवा तारक मंत्र यह है कि पवित्र बनो और योगी बनो।

67वीं शिव जयन्ती

अब वही अति धर्मग्लानी का समय पुन: आ चुका है और पतित पावन परमात्मा शिव साकार ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर अपने कल्प पूर्व वाला रुद्र गीता ज्ञान सुना रहे हैं। इस वर्ष शिवरात्रि को हम उनके इस दिव्य अवतरण की 67वीं मना रहे हैं। आप सभी मनुष्य आत्माओं को ईश्वरीय निमन्त्रण है कि शिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को यथार्थ रीति से जानकर जन्म-जन्मान्तर के लिए अविनाशी ईश्वरीय सुख-शान्ति को प्राप्त करें।

ओम् शान्ति।

लेख-4

शिवरात्रि – परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण और दिव्य कर्म का यादगार पर्व

काल चक्र अविरल गति से घूमता है। भूतकाल की घटनाओं की केवल स्मृति ही रह जाती है। उसी स्मृति को पुन: ताज़ा करने के लिये यादगारें बनाई जाती हैं, कथाएं लिखी जाती हैं एवं जन्म-दिवस मनाए जाते हैं जिनमें श्रद्धा, प्रेम, स्नेह, सद्भावना का पुट होता है। परन्तु एक वह दिन भी आ जाता है जबकि श्रद्धा और स्नेह का अन्त हो जाता है और रह जाती है केवल परम्परा। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज पर्व भी उसी परम्परा को निभाने मात्र मनाए जाते हैं भारतवर्ष अध्यात्म प्रधान देश है और जितने पर्व भारत में मनाए जाते हैं शायद ही उतने पर्व अन्य किसी देश में मनाए जाते हों। समय-प्रति-समय ये त्योहार उन्हीं छिपी हुई आध्यात्मिकता की रश्मियों को जागृत करते हैं। शिवरात्रि भी उन विशिष्ट पर्वों में मुख्य स्थान रखता है।

महाशिवरात्रि का नाम जैसा महान् है वैसे ही यह महानतम् पर्व समस्त संसार की आत्माओं को परमपिता परमात्मा शिव की स्मृति दिलाता है। भारतवर्ष में भगवान शिव के लाखों मंदिर पाए जाते हैं और शायद ही कोई ऐसा मन्दिर हो जहां शिवलिंग की प्रतिमा न हो। शायद ही कोई ऐसा धर्मग्रन्थ हो जिसमें शिव का गायन न हो। परन्तु विडम्बना यह है कि फिर भी शिव के परिचय से सर्व मनुष्यात्माएं अपरिचित हैं। भारत के कोने-कोने में निराकार ज्योतिबिन्दु शिव परमात्मा की आराधना भिन्न-भिन्न नामों से की जाती है। उदाहरणार्थ अमरनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, बबूलनाथ, पशुपतिनाथ इत्यादि भगवान शिव के ही तो मंदिर हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण एवं मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के इष्ट परमात्मा शिव ही हैं। गोपेश्वर एवं रामेश्वर जैसे विशाल शिव के मंदिर आज दिन तक इसके साक्षी हैं। भारत से बाहर, विश्वपिता शिव का मक्का में संग-ए-असवद, मिश्र में ''ओसिरिस'' की अराधना, बेबोलोन में ''शिअन'' नाम से पूजा व सम्मान इसी बात का द्योतक है। स्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा शिव ने अवश्य कोई महान् कर्त्तव्य किया होगा।

शिवरात्रि क्यों मनाते हैं?

शिवरात्रि निराकार परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अलौकिक जन्म का स्मरण दिवस है। हम इस संसार में किसी का भी जन्मोत्सव मनाते हैं तो उसे जन्मदिवस कहते हैं भले ही वह रात्रि में पैदा हुआ हो, मानव जन्मोत्सव को जन्म-रात्रि नहीं वरन् जन्म-दिवस के रूप में मनाते हैं परन्तु शिव के जन्म-दिवस को शिवरात्रि ही कहते हैं। वास्तव में यहाँ शिव के साथ जुड़ी हुई रात्रि स्थूल अंधकार का वाचक नहीं है। यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कल्प के अन्त के समय व्याप्त घोर अज्ञानता और तमोप्रधानता का प्रतीक है। जब सृष्टि पर अज्ञान अंधकार छाया होता है। काम, क्रोध आदि विकारों के वशीभूत मानव दु:खी व अशांत हो जाता है; धर्म, अधर्म का रूप ले लेता है, भ्रष्टाचार का चारों ओर बोलबाला होता है तब ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव अज्ञानता रूपी अंधकार का विनाश करने के लिये प्रकट होते हैं। विकारी, अपवित्र दुनिया को निर्विकारी, पावन दुनिया बनाना तथा कलियुग, दु:खधाम के बदले सतयुग, सुखधाम की स्थापना करना सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा शिव का ही कार्य है।

परमात्मा अजन्मा है अर्थात् अन्य आत्माओं के सदृश्य माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। वे परकाया प्रवेश करते हैं अर्थात् 'स्वयंभू' परमात्मा शिव प्रकृति को वश में करके साधारण वृद्ध तन का आधार लेते हैं और उस तन का नाम रखते हैं 'प्रजापिता ब्रह्मा'। वे ब्रह्मा के साकार माध्यम से रूद्र-ज्ञान-यज्ञ रचते हैं जिसमें पूरी आसुरी दुनिया स्वाहा हो जाती है।

शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य:

परमपिता परमात्मा शिव बिन्दु रूप हैं इसलिये भक्त-जन शिवलिंग की अराधना करते हैं, उस पर दूध मिश्रित लस्सी, बेल-पत्ते और अक के फूल चढ़ाते हैं। अक के फूल एवं धतूरा चढ़ाने का रहस्य यह है कि अपने विकारों को उन्हें देकर निर्विकारी बन पवित्रता के व्रत का पालन करें। परमपिता परमात्मा शिव संसार की समस्त आत्माओं को पवित्र बनाकर उनके पथ प्रदर्शक बनकर परमधाम वापिस ले जाते हैं, इसलिए उन्हें आशुतोष व भोलानाथ भी कहते हैं। ब्रह्मचर्य व्रत सच्चा उपवास है क्योंकि इसके पालन से मनुष्यात्मा को परमात्मा का सामीप्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार एक रात जागरण करने से अविनाशी प्राप्ति नहीं होती परन्तु अब तो कलियुग रूपी महाशिवरात्रि चल रही है उसमें आत्मा को ज्ञान द्वारा जागृत करना ही सच्चा जागरण है। इस आध्यात्मिक जागरण द्वारा ही मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है।

शिव सर्व आत्माओं के परमपिता हैं:

परमपिता परमात्मा शिव का यही परिचय यदि सर्व मनुष्यात्माओं को दिया जाये तो सभी सम्प्रदायों को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। क्योंकि परमात्मा शिव का स्मृतिचिन्ह शिवलिंग के रूप में सर्वत्र सर्व धर्मावलम्बियों द्वारा मान्य है। यद्यपि मुसलमान भाई मूर्तिपूजा नहीं करते हैं तथापि वे मक्का में संग-ए-असवद नामक पत्थर को आदर से चूमते हैं। क्योंकि उनका यह दृढ़ विश्वास है कि यह भगवान का भेजा हुआ है। अत: यदि उन्हें यह मालूम पड़ जाए कि खुदा अथवा भगवान शिव एक ही हैं तो दोनों धर्मों से भावनात्मक एकता हो सकती है। इसी प्रकार ओल्ड टेस्टामेन्ट में मूसा ने जेहोवा का वर्णन किया है। वह ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा का ही यादगार है। इस प्रकार विभिन्न धर्मों के बीच मैत्री भावना स्थापित हो सकती है।

रामेश्वरम् में राम के ईश्वर शिव, वृंदावन में श्रीकृष्ण के इष्ट गोपेश्वर तथा एलीफेण्टा में त्रिमूर्ति शिव के चित्रों से स्पष्ट है कि सर्वात्माओं के आराध्य परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। शिवरात्रि का त्योहार सभी धर्मों का त्योहार है तथा सभी धर्म वालों के लिये भारतवर्ष तीर्थ है। यदि इस प्रकार का परिचय दिया जाता है तो विश्व का इतिहास ही कुछ और होता तथा साम्प्रदायिक दंगे, धार्मिक मतभेद, रंगभेद, जातिभेद इत्यादि नहीं होते। चहुं ओर भ्रातृत्व की भावना होती।

आज पुन: वही घड़ी है, वही दशा है, वही रात्रि है जब मानव समाज पतन की चरम सीमा तक पहुंच चुका है। ऐसे समय में कल्प की महानतम घटना तथा दिव्य संदेश सुनाते हुए हमें अति हर्ष हो रहा है कि कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के इस संगमयुग पर ज्ञान-सागर, प्रेम व करुणा के सागर, पतित-पावन, स्वयंभू परमात्मा शिव हम मनुष्यात्माओं की बुझी हुई ज्योति जगाने हेतु अवतरित हो चुके हैं। वे साकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम द्वारा सहज ज्ञान व सहज राजयोग की शिक्षा देकर विकारों के बंधन से मुक्त कर निर्विकारी पावन देव पद की प्राप्ति कराकर दैवी स्वराज्य की पुन: स्थापना करा रहे हैं। इसलिये प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय समूचे विश्व के 89 देशों में अपने 6000 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से 67वीं महाशिवरात्रि का पावन पर्व बहुत धूमधाम से मना रहा है। आइये हम सभी इसमें शामिल हों, निर्विकारी बनने की प्रतिज्ञा करें।

ओम् शान्ति।

लेख-5

शिव का एक विराट स्वरूप

भारतवासी हर वर्ष शिवरात्रि मनाते हैं किन्तु इस सत्यता को सभी भूल चुके हैं कि यह भारत का सबसे बड़ा त्योहार है। शिवरात्रि के वास्तविक महत्त्व को समझकर इसे सार्थक रूप में मनाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि शिव कौन हैं और रात्रि के साथ इनका क्या सम्बन्ध है?

शिव नाम परमात्मा का है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी। शिव को बिन्दु भी कहते हैं। परमात्मा इस कल्प वृक्ष का वृक्षपति है, निमित्त करण है। परमात्मा ही सब सुखों का अक्षय भण्डार है, विश्व कल्याणकारी एवम् सर्व का गति-सदगति दाता है। अत: शिव, परमात्मा का ही पर्यायवाची नाम है।

भारत में शिव की प्रतिमा शिवलिंग अनेक मन्दिरों में है। इनमें मुख्य अमरनाथ, सोमनाथ, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, मुक्तेश्वर, महाकालेश्वर इत्यादि नाम प्रसिद्ध हैं। ये परमात्मा के सभी नाम किसी-न-किसी गुण अथवा दिव्य कर्त्तव्य के सूचक हैं। दक्षिण में रामेश्वर, वृन्दावन में गोपेश्वर के मन्दिर भी प्रमाणित करते हैं कि शिव ही श्रीराम व श्रीकृष्ण के परम पूज्य परमात्मा हैं।

शिवलिंग परमात्मा की प्रतिमा है-

परमात्मा ज्योति स्वरूप है इसलिये साकारी एवं आकारी देवताओं की भेंट में उन्हें निराकार कहा जाता है। परमात्मा के ज्योति बिन्दु स्वरूप का साक्षात्कार केवल दिव्य दृष्टि के द्वारा ही हो सकता है। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। परमात्मा भी निराकार ज्योतिस्वरूप है। आज बहुत से लोग लिंग शब्द का अर्थ न जाने के कारण लिंग के बारे में अश्लील कल्पना करते हैं। वास्तव में, परमात्मा शिव के ज्योति स्वरूप होने के कारण ही उनकी प्रतिमा को ज्योतिर्लिंग अथवा शिवलिंग कहा जाता है।

शिव की मान्यता विश्व व्यापी है -

अन्य धर्मों के लोग भी परमात्मा शिव की इस प्रतिमा को अपनी-अपनी रीति के अनुसार मान्यता देते हैं। मक्का में यह स्मरण चिन्ह 'संग-ए-असवद' नाम से विख्यात है। जापान के बहुत से बौद्ध धर्मावलम्बी आज भी शिवलिंग के आकार के पत्थर को सामने रखकर ध्यान लगाते हैं। ईसा ने परमात्मा को 'दिव्य ज्योति' कहा है। इटली तथा फ्रांस के गिरजा घरों में अभी तक शिवलिंग की प्रतिमा रखी है। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते हैं। शंकराचार्य ने भी शिवलिंग के मठ स्थापित किये। गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरु गोविन्द सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

परमात्मा शिव के दिव्य कर्त्तव्य :

शिवलिंग पर जो त्रिपुण्ड बनी होती है अथवा जो तीन पत्ते चढ़ाये जाते हैं वह परमात्मा के मुख्य तीन गुणों अथवा कर्तव्यों को सिद्ध करते हैं कि शिव त्रिमूर्ति, त्रिकालदर्शी अथवा त्रिलोकनाथ है। त्रिमूर्ति का अर्थ यह है कि ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के रचयिता हैं तथा इनके द्वारा क्रमश: नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना, पालना एवं कलयुगी दुनियां का विनाश कराने वाले करन करावनहार स्वामी हैं।

शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य:

शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या से एक दिन पहले मनायी जाती है। फाल्गुन मास वर्ष के अन्त का द्योतक होता है व उसकी चतुर्दशी रात्रि घोर अन्धकार की निशानी है। इस दिन शिवरात्रि मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव कल्पान्त के घोर अज्ञान रूपी रात्रि के समय, पुरानी सृष्टि के विनाश से कुछ समय पूर्व अवतरित होक। तमोप्रधानता एवं पापाचार का विनाश करके दु:ख-अशान्ति को समूल नष्ट करते हैं।

ज्योति बिन्दु गंगाधर परमात्मा शिव कलियुग के अन्त व सतयुग की आदि के सन्धिकाल अथवा संगम के समय ब्रह्मा के तन अथवा भाग्यशाली शरीर रूपी रथ में प्रवेश करके ईश्वरीय ज्ञान देते हैं। वास्तव में यही सच्चा गीता ज्ञान है। इसे शरीरधारी देवता श्री कृष्ण ने नहीं बल्कि गोपेश्वर अव्यक्त मूर्त परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा सुनाया था। ब्रह्मा द्वारा जो मातायें व कन्यायें 'सुधाकर' परमात्मा शिव से ज्ञान सुधा का अमृत पान करती हैं वही शिव शक्तियां होती हैं। ये चैतन्य मातायें ही भारत के जन-मन को शिव द्वारा प्राप्त ज्ञान से पावन करती हैं। इस कारण से शिवरात्रि भारत का सबसे बड़ा त्योहार है।

शिवरात्रि का ईश्वरीय सन्देश:

अब परमात्मा शिव आदेश देते हैं - मेरे प्रिय भक्तो, आप जन्म-जन्मान्तर से बिना यथार्थ पहचान के मेरी जड़ प्रतिमा की पूजा, जागरण तथा उपवास करके शिवरात्रि मानते आये हो। अब अपने इस अन्तिम जन्म में महाविनाश से पूर्व मेरे ज्ञान द्वारा अज्ञान निद्रा से जागरण कर मेरे साथ मनमनाभव अर्थात् योग युक्त होकर विकारों का सच्चा उपवास करो। इस ज्ञान एवम् योग बल से महाविनाश तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करो। यही सच्चा महाव्रत अथवा शिवव्रत है।

67वी शिव जयन्ती:

अब अति धर्म ग्लानि का समय पुन: आ चुका है और पवित्र पावन परमात्मा शिव ब्रह्मा के साकार तन में प्रवेश करके अपना कल्प (5000 वर्ष) पूर्व वाला रूद्र-गीता–ज्ञान सुना रहे हैं। इस शिवरात्रि को हम उनके दिव्य अवतरण की 67वीं जयन्ती मना रहे हैं।

सभी मनुष्यात्माओं को सादर ईश्वरीय निमन्त्रण है कि शिवरात्रि के यथार्थ आध्यात्मिक रहस्य को जानकर शीघ्र ही आने वाली सतयुगी नई दुनिया में देवपद को प्राप्त करें।

ओम् शान्ति।

लेख-6

महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक महात्म्य

भारतीय जन-मानस में यह मान्यता है कि शिव में सृजन और संहार की क्षमता है। उनकी यह भी मान्यता है कि शिव 'आशुतोष' हैं अर्थात् जल्दी और सहज ही प्रसन्न हो जाने वाले हैं। इसी भावना को लेकर वे शिव पर जल चढ़ाते और उनकी पूजा करते हैं। परन्तु प्रश्न उठता है कि जीवन भर नित्य शिव की पूजा करते रहने पर भी तथा हर वर्ष श्रद्धापूर्वक शिवरात्रि पर जागरण, व्रत इत्यादि करने पर भी मनुष्य के पाप एवं सन्ताप क्यों नहीं मिटते? उसे मुक्ति और जीवनमुक्ति अथवा शक्ति क्यों नहीं मिलती? उसे राज्य भाग्य का अमर वरदान क्यों नहीं प्राप्त होता? आखिर शिव को प्रसन्न करने की सहज विधि क्या है? शिवरात्रि का वास्तविक रहस्य क्या है? हम सच्ची शिवरात्रि कैसे मनायें? 'शिव' का 'रात्रि' के साथ क्या सम्बन्ध है जब कि अन्य देवताओं की पूजा-अर्चना दिन में होती है। शिवरात्रि से जुडे इन प्रश्नों का उत्तर इसके आध्यात्मिक रहस्य का उद्घाटन करते हैं।

महारात्रि अज्ञानता और पापाचार की सूचक है

'शिवरात्रि' फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अन्तिम रात्रि (अमावस्या) से एक दिन पहले मनायी जाती है। परमपिता परमात्मा शिव का अवतरण इस लोक में कलियुग के पूर्णान्त से कुछ ही वर्ष पहले हुआ था जबकि सारी सृष्टि अज्ञान अन्धकार में थी। इसलिए 'शिव' का सम्बन्ध 'रात्रि' से जोड़ा जाता है और परमात्मा शिव की रात्रि में पूजा को अधिक महत्त्व दिया जाता है। श्री नारायण तथा श्रीराम आदि देवताओं का पूजन तो दिन में होता है क्योंकि श्री नारायण और श्री राम का जन्म क्रमश: सतयुग एवं त्रेतायुग में हुआ था। मन्दिरों में उन देवताओं को रात्रि में 'सुला' दिया जाता है और दिन में ही उन्हें जगाया जाता है। परन्तु परमात्मा शिव की पूजा के लिए तो भक्त लोग स्वयं भी रात्रि को जागरण करते हैं।

आज पूर्व लिखित रहस्य को न जानने के कारण कई लोग कहते हैं कि 'शिव' तमोगुण के अधिष्ठाता (आधार) है इसलिए शिव की पूजा रात्रि को होती है और इसकी याद में शिवरात्रि मनायी जाती है। क्योंकि 'रात्रि' तमोगुण की प्रतिनिधि है परन्तु उनकी यह मान्यता बिल्कुल गलत है क्योंकि वास्तव में शिव तमोगुण के अधिष्ठाता नहीं है बल्कि तमोगुण के संहारक अथवा नाशक हैं। यदि शिव तमोगुण के अधिष्ठाता होते तो उन्हें शिव अर्थात् कल्याणकारी, पापकटेश्वर एवं मुक्तेश्वर आदि कहना ही निरर्थक हो जाता। 'शिव' का अर्थ है 'कल्याणकारी'। शिव का कर्त्तव्य आत्माओं का कल्याण करना है जबकि तमोगुण का अर्थ अकल्याणकारी होता है। यह पापवर्धक एवं मुक्ति में बाधक है।

अत: वास्तव में 'शिवरात्रि' इसलिए मनायी जाती है क्योंकि परमात्मा शिव ने कल्प के अन्त में अवतरित होकर अज्ञानता, दु:ख और अशान्ति को समाप्त किया था।

महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक महत्त्व -

महाशिवरात्रि के बारे में एक मान्यता तो यह भी है कि इस रात्रि को परमपिता परमात्मा शिव ने महासंहार कराया था और दूसरी मान्यता यह है कि इसी रात्रि को अकेले ईश्वर ने अम्बा इत्यादि शक्तियों से सम्पन्न होकर रचना का कार्य प्रारम्भ किया था। परन्तु प्रश्न उठता है कि शिव तो ज्योर्तिर्लिंगम् और अशरीरी हैं। वह संहार कैसे और किस द्वारा कराते हैं और नई दुनिया स्थापना की स्पष्ट रूपरेखा क्या है?

ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सतोप्रधान सृष्टि की स्थापना और शंकर द्वारा कलियुगी तमोप्रधान सृष्टि का महाविनाश कराते हैं। कलियुग के अन्त में ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके उसके मुख द्वारा ज्ञान-गंगा बहाते हैं। इसलिए शिव को 'गंगाधर' भी कहते हैं और 'सुधाकर' अर्थात् 'अमृत देने वाला' भी कहते हैं। प्रजापिता

ब्रह्मा द्वारा जो भारत-माताएं और कन्याएं 'गंगाधर' शिव की ज्ञान-गंगा में स्नान करती अथवा ज्ञान सुधा (अमृत) का पान करती हैं, वे ही शिव-शक्तियां अथवा अम्बा, सरस्वती इत्यादि नामों से विख्यात होती हैं। ये चैतन्य ज्ञान-गंगाएं अथवा ब्रह्मा की मानस पुत्रियां ही शिव का आदेश पाकर भारत के जन-मन को शिव-ज्ञान द्वारा पावन करती हैं। इसलिए शिव 'नारीश्वर' और 'पतित-पावन' अथवा 'पाप-कटेश्वर' भी कहलाते हैं क्योंकि मनुष्यात्माओं को शक्ति-रूपा नारियों अथवा माताओं द्वारा ज्ञान देकर पावन करते हैं तथा उनके विकारों रूपी हलाहल को पीकर उनका कल्याण करते हैं और उन्हें सहज ही मुक्ति तथा जीवन मुक्ति का वरदान देते हैं। वे सभी मनुष्यात्माओं को शरीर से मुक्त करके शिवलोक को ले जाते हैं। इसलिए वे मुक्तेश्वर भी कहलाते हैं। परन्तु ये दोनों कार्य कलियुग के अन्त में अज्ञानरूपी रात्रि के समय शिव के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

पूर्वोक्त से स्पष्ट है कि 'शिवरात्रि' एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वृत्तांत का स्मरणोत्सव है। यह सारी सृष्टि की समस्त मनुष्यात्माओं के पारलौकिक परमपिता परमात्मा के दिव्य जन्म का दिन है और सभी की मुक्ति और जीवनमुक्ति रूपी सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति की याद दिलाती है। इस कारण से शिवरात्रि सभी जन्मोत्सवों अथवा जयन्तियों की भेंट में सर्वोत्कृष्ट है क्योंकि अन्य सभी जन्मोत्सव तो मनुष्यात्माओं अथवा देवताओं के जन्म दिन की याद में मनाये जाते हैं जब कि शिवरात्रि मनुष्य को देवता बनाने वाले, देवों के भी देव, धर्म पिताओं के भी पिता, सद्गतिदाता, परमप्रिय, परमपिता परमात्मा के दिव्य और परमकल्याणकारी जन्म का स्मरणोत्सव है। इसे सारी सृष्टि के सभी मनुष्यों को बड़े चाव और उत्साह से मनाना चाहिए। परन्तु आज मनुष्यात्माओं को परमपिता परमात्मा का यथार्थ परिचय न होने के कारण अथवा परमात्मा शिव को नाम रूप से न्यारा मानने के कारण शिव जयन्ति का महात्म्य बहुत कम हो गया है और लोग धर्म के नाम पर ईर्ष्या और लड़ाई करते हैं।

सच्ची शिवरात्रि मनाने की रीति

भक्त लोग शिवरात्रि के दिन होने वाले उत्सव पर सारी रात्रि जागरण करते हैं और यह सोच कर कि खाना खाने से आलस्य, निद्रा और मादकता का अनुभव होने लगता है, वे अन्न भी नहीं खाते हैं ताकि उनके उपवास से भगवान शिव प्रसन्न हों। परन्तु मनुष्यात्माओं को तमोगुण में सुलाने वाली और रूलाने वाली मादकता तो पाँच विकार हैं। जब तक मनुष्य इन विकारों का त्याग नहीं करता तब तक उसकी आत्मा का पूर्ण जागरण हो ही नहीं सकता और तब तक आशुतोष भगवान शिव भी उन पर प्रसन्न नहीं हो सकते हैं क्योंकि भगवान शिव तो स्वयं 'कामारि' (काम के शत्रु) हैं वे भला 'कामी' मनुष्य पर कैसे प्रसन्न हो सकते हैं? दूसरी बात यह है कि फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी रात्रि को मनाया जाने वाला शिवरात्रि महोत्सव तो कलियुग के अन्त के उन वर्षों का प्रतीक है, जिसमें भगवान शिव ने मनुष्यों को ज्ञान द्वारा पावन करके कल्याण का पात्र बनाया था। अत: शिवरात्रि का व्रत सारे वर्ष मनाना चाहिए क्योंकि वर्तमान संगमयुग में परमात्मा का अवतरण हो चुका है। इस कलियुगी सृष्टि के महाविनाश की सामग्री एटम, हाइड्रोजन, परमाणु बमों के रूप में तैयार हो चुकी है व परमप्रिय परमात्मा द्वारा विश्व नव-निर्माण का कर्त्तव्य भी सम्पन्न हो रहा है। अब महाविनाश के समय तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें ताकि मनोविकारों पर ज्ञानयोग द्वारा विजय प्राप्त कर सकें। यही महाव्रत है जो कि 'शिवव्रत' के नाम से प्रसिद्ध है और यही वास्तव में शिव का मन्त्र (मत) है जो कि 'तारक-मन्त्र' के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि इसी व्रत से अथवा मन्त्र से मनुष्यात्माएं इस संसार रूपी विषय सागर से तैर कर, मुक्त होकर शिवलोक को चली जाती हैं। इस वर्ष परमात्मा शिव को इस सृष्टि पर अवतरित हुए 67 वर्ष हो चुके हैं। परमात्मा शिव ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा से सर्व मनुष्यात्माओं को पावन बना रहे हैं। आप भी परमात्मा के साथ सच्ची शिवरात्रि मनाकर जन्म-जन्मान्तर के लिए श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त कर सकते हैं। ओम् शान्ति।

लेख-7

महाशिवरात्रि की वर्तमान परिस्थितियों में प्रासंगिकता

शिव के साथ जुड़ी हुई 'रात्रि' आध्यात्मिक रहस्य की ओर संकेत है। हमारे यहां बच्चे का जन्म अगर रात को भी होता है तब भी हम उसका जन्म दिन मनाते है। यदि किसी महापुरुष का जन्म होता है तो कहते हैं आज उनकी जयन्ती है या किसी देवी-देवता का जन्मोत्सव मनाते है तो कहते हैं अष्टमी, नवमी आदि है। परन्तु शिव के साथ ही रात्रि का त्योहार उस समय से मनाया जाता है जब यह सृष्टि विकारों के वशीभूत होकर अज्ञान-अंधकार में होती है और मनुष्य पतित एवं दु:खी हुए अज्ञान निद्रा में होते हैं। तब पतित पावन परम पिता शिव इस सृष्टि में दिव्य जन्म लेते हैं। इस प्रकार अवतरित होकर ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव ज्ञान प्रकाश देते हैं। जो कुछ ही समय में ज्ञान का प्रभाव सारे विश्व में फैल जाता है। कलियुग और तमोगुण के स्थान पर सतोगुण की स्थापना हो जाती है और अज्ञान अन्धकार का तथा विकारों का समूल विनाश हो जाता है।

शिव का अर्थ है 'कल्याणकारी'। परमात्मा का यह नाम इसलिए है कि वह धर्म ग्लानि के समय, जब सभी मनुष्य आत्माएं माया अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पांच विकार के कारण दु:खी, अशांत। पतित एवं भ्रष्टाचारी बन जाती हैं तब उनको पुन: पावन तथा संपूर्ण बनाने का कल्याणकारी कर्त्तव्य करते हैं। शिव ब्रह्म लोक में निवास करते हैं और वे कर्म भ्रष्ट तथा धर्म भ्रष्ट संसार का उद्धार करने ब्रह्मलोक से नीचे उतर कर एक मनुष्य के शरीर का आधार लेते हैं। परमात्मा शिव के इस अवतरण अथवा दिव्य एवं अलौकिक जन्म की पुनीत स्मृति में ही 'शिवरात्रि' का त्योहार मनाया जाता है।

परमात्मा शिव किसी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते क्योंकि वे तो स्वयं ही सबके माता-पिता हैं, मनुष्य सृष्टि के चेतन बीज रूप हैं और जन्म मरण तथा कर्म बंधन से रहित हैं। वे एक साधारण मनुष्य के वृद्धावस्था वाले तन में प्रवेश करते हैं। इसे ही परमात्मा शिव का 'दिव्य जन्म' अथवा अवतरण कहा जाता है। क्योंकि वे जिस तन में प्रवेश करते हैं वह एक जन्म मरण तथा कर्म बन्धन के चक्कर में आने वाली मनुष्यात्मा ही का शरीर होता है।

प्राय: सभी धर्मों के लोग कहते हैं कि परमात्मा एक है और सभी का पिता है तथा सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। परन्तु प्रश्न उठता है वह एक पारलौकिक परमपिता कौन है जिसे सभी मानते हैं? आप देखेंगे कि भले ही हरेक धर्म के स्थापक अलग-अलग हैं परन्तु हरेक धर्म के अनुयायी निराकार, ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव की प्रतिमा (शिवलिंग) को किसी न किसी रूप में मान्यता देते हैं। भारत में परमपिता परमात्मा शिव के ज्योतिस्वरूप शिवलिंग की व्यापक स्तर पर मान्यता दे तो देते ही हैं परन्तु भारत से बाहर भी दूसरे धर्मों के लोग भी इसको मान्यता देते हैं। मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी इसी आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सन्मान से चूमते हैं। उसे वे संगे-ए-असवद कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? ईसाइयों के धर्म स्थापक ईसा मसीह तथा सिक्खों के धर्म स्थापक नानक जी ने भी परमात्मा को एक निराकार ज्योति स्वरूप ही माना है। जापान में बौद्ध धर्म के अनुयाई भी इसी आकार की एक प्रतिमा अपने सामने रखकर उस पर अपना ध्यान एकाग्र करते हैं।

यह शिवरात्रि का पर्व सभी मनुष्यात्माओं को सम्मिलित पर्व के रूप में मनाना चाहिए क्योंकि परमात्मा शिव हम सब आत्माओं के पिता हैं। वह जो है, जैसा है, उसे वैसा ही जानकर उनकी याद में रहकर अपने मूल आत्मा स्वरूप को पहचानना और मूल गुण को धारण करना चाहिए। यही इस महा पर्व का संदेश सारे मानव समाज के लिए है जिसे आज की प्रभावी रीति से स्वीकार करना व व्यवहार में लाना हमारे अपने ही हित में है। अत: इस शिवरात्रि पर्व पर हम सभी मनुष्य प्राणी यह दृढ़ संकल्प लें कि हम देहाभिमान त्याग आत्म स्थिति में स्थित होकर व आत्मा के मूल गुणों को धारण कर जीवन के व्यवहार में लायेंगे। ओम् शान्ति।

लेख-8

महाशिवरात्रि विकारों पर विजय पाने का यादगार दिन है

महा शिव रात्रि, कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव के द्वारा इस धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, अज्ञान, अंधकारपूर्ण समय पर दिव्य अवतरण लेकर, विकारों के पंजे से सर्व आत्माओं को स्वतंत्र कराकर, ज्ञान की ज्योति से पवित्रता की स्निग्ध किरणें बिखराक। सुख, शांति, आनन्द संपन्न दैवी सृष्टि की स्थापना की एक पवित्र स्मृति है। मानवता में नवजीवन सृजन का बोधक यह दिवस अनेक शाश्वत सत्यों को सजीव करने का परम महत्व रखता है।

शिव रात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है, जो कलियुग के अंत में होने वाली घोर अज्ञानता और अपवित्रता का द्योतक है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से द्वापर युग और कलियुग को रात्रि अथवा कृष्ण पक्ष कहा गया है। कलियुग का पूर्णांत होने से कुछ वर्ष पहले का जो समय है वह कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी-रात्रि के समान है। इसलिए शिव का संबंध रात्रि से जोड़ा जाता है और रात्रि में ही पूजा-पाठ को महत्त्व दिया गया है। अन्य देवी-देवताओं का पूजन दिन में होता है क्योंकि श्री नारायण एवं श्रीराम आदि देवता सतयुग और त्रेतायुग रूपी दिन में थे। परंतु परमात्मा शिव की पूजा के लिए तो भक्त लोग स्वयं भी रात्रि का जागरण करते हैं।

शिव मंदिरों में शिव की प्रतिमा के कुछ ऊपर रख हुए घड़े से प्रतिमा पर बूंद-बूंद जल निरंतर पड़ता ही रहता है। इसका आध्यात्मिक रहस्य यह है कि सच्चे स्नेह के साथ परमात्मा शिव से बुद्धि रूपी कलश से भरे ज्ञानरूपी अमृत के बिन्दुओं का तादात्म्य शिव परमात्मा की ओर निरन्तर लगा रहे, शिवलिंग पर बेलपत्र वा धतूरा चढ़ाना अर्थात् अपने अंदर के विषय विकारों को त्यागना है। परमात्मा निराकार त्रिमूर्ति शिव हैं। वे स्थापना, पालना तथा विनाश के दिव्य कर्त्तव्यों के लिए तीन सूक्ष्म देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर की रचना करते हैं। इसीलिए भक्तजन शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाते हैं जिसमें तीन पत्ते होते हैं। कितना अद्‌भुत है कि प्रकृति ने भी त्रिमूर्ति परमात्मा शिव की स्मृति में ही तीन पत्रों वाले बेलपत्र की रचना की है। शिवभक्त शिवरात्रि पर उपवास अथवा व्रत भी रखते हैं। वास्तव में सच्चा व्रत काम, क्रोध आदि विकारों का मन से व्रत करना है। उपवास का अर्थ है परमात्मा के पास वास करना अर्थात् मन से शिव को याद करना है। भक्त लोग शिवरात्रि के अवसर पर सारी रात को जागरण करते हैं और यह सोचकर कि खाना खाने से आलस्य निद्रा और मादकता का अनुभव होने लगता है, इसलिए ये अन्न का त्याग करते हैं, जिससे भगवान शिव प्रसन्न हों। परन्तु मनुष्य आत्मा को तमोगुण में सुलाने वाली और रूलाने वाली मादकता तो यह माया अर्थात् पांच विकार ही हैं। जब तक मनुष्य इन विकारों का त्याग नहीं करता, तब तक उसकी आत्मा का सच्चा जागरण नहीं हो सकता। आशुतोष भगवान शिव जो काम के शत्रु हैं, वे कामी मनुष्य पर कैसे प्रसन्न हो सकते हैं? दूसरी बात यह है कि फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चौदहवीं रात्रि को मनाया जाने वाला शिव रात्रि महोत्सव तो कलियुग के अंत में उन वर्षों का प्रतिनिधि है, जिनमें भगवान शिव ने मनुष्यों को ज्ञान द्वारा पावन करके कल्याण का पात्र बनाया। अत: शिवरात्रि का व्रत तो उन सारे वर्षों में रखना चाहिए। आज यह समय चल रहा है जबकि शंकर द्वारा इस कलियुगी सृष्टि के महाविनाश की सामग्री एटम बम तथा हाइड्रोजन बामों के रूप में तैयार हो चुकी है तथा परमपिता शिव विश्व नवनिर्माण का कर्त्तव्य पुन: कर रहे हैं। तो सच्चे भक्त जनों का कर्तव्य है कि अब महाविनाश के समय तक ब्रह्मचर्य व्रत का पान करें तथा मनो विकारों पर ज्ञान-योग द्वारा विजय प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें, यही महाव्रत है जो शिवव्रत के नाम से प्रसिद्ध है। वैसे तो सभी देवी-देवताओं,

महात्माओं, धर्म संस्थापकों, महान विचारकों, राजनीतिज्ञों तथा महापुरुषों की जयंती से सर्वोच्च तथा श्रेष्ठतम यही एक शिव जयंती है। संसार में जो भी जन्म दिन मनाए जाते हैं वह किसी विशेष धर्म या संप्रदाय के अनुयायियों के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं जैसे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा श्रीराम नवमी को सनातन धर्म के लिए लोग अधिक महत्त्व देते है परंतु शिव रात्रि तो सभी धर्मों के भी पारलौकिक परमपिता परमात्मा का जन्म दिन है, इसे सारी सृष्टि के सभी मनष्यों को बड़े भाव एवं उत्साह से मनाना चाहिए। परन्तु आज परमात्मा को सर्वव्यापी अथवा नामरूप से न्यारा मानने के कारण शिव जयंती का महत्त्व बहुत कम हो गया है। पतित पावन परमात्मा शिव के गुणों एवं कर्त्तव्यों की विशालता तो अपरमअपार है। वर्तमान समय में परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित हो सतोप्रधान पावन सतयुगी सृष्टि का नवनिर्माण कर रहे हैं। महाशिवरात्रि उनके इसी दिव्य कर्मों का यादगार पर्व है।

ईश्वरीय सन्देशः इस वर्ष निराकार परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण की 67वीं जयंन्ती मना रहे हैं। परमात्मा शिव साकार मनुष्य प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर नई सतयुगी दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्म करा रहे हैं। आप सभी आत्माओं को ईश्वरीय निमन्त्रण है कि परमात्मा द्वारा सिखाये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा अपने तमोगुणी संस्कारों का शमन करके अविनाशी ईश्वरीय राज्य-भाग्य के वर्से का अधिकारी बनें।

ओम् शान्ति।

लेख-9

शिव : किसी मस्त योगी का नाम नहीं है

परमात्मा का स्मरण चिन्ह शिवलिंग:

सभी महान् विभूतियों की स्मृति को बनाये रखने के लिए उनके स्मारक चिन्ह,मूर्तियां अथवा मंदिर आदि बनाये जाते है। परन्तु संसार में सब मूर्तियों में सर्वाधिक पूजा सम्भवत: शिवलिंग की ही होती है। विश्व में शायद की कोई देश होगा जहाँ शिवलिंग की पूजा किसी न किसी रूप में न होती हो। शिव का शब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है-प्रतिमा अथवा चिन्ह। अत: शिवलिंग का अर्थ हुआ-कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते है) के बनाये जाते थे क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिंदु है। सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थायी रूप में मूर्तिया स्थापित न भी करें परंतु फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य पवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति के रूप में अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों मंदिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में शिव के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है। इनमें से हिमालय स्थित केदारेश्वर लिंग, काशी में विश्वनाथ और सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध हैं।

यद्यपि आज ईसाई, मुसलमान, बौद्ध तथा दूसरे मतों के लोग शिवलिंग की उतनी और उस रीति से पूजा नहीं करते हैं जैसे कि हिन्दू करते हैं फिर भी ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान समय में भी अनेक विभिन्न धर्मों वाले लोग शिवलिंग को धार्मिक महत्त्व देते हैं। उदाहरण के रूप में रोम देश में कैथोलिक लोग अण्डाकार रूप के पत्थर को आज तक भी पूजते हैं। अरब देश में पवित्र मक्का तीर्थस्थान पर मुसलमान यात्री आज भी इसी प्रकार के पत्थर को जिसे 'संग-ए असवद' या मक्केश्वर कहा जाता है, चूमते हैं। जापान में रहने वाले बौद्ध धर्म के कई लोग जब साधना करने बैठते हैं तो अपने सम्मुख शिवलिंग जैसा एक पत्थर तीन फुट दूरी पर एवं तीन फुट ऊंचे स्थान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए रखते हैं। इजराइल तथा यहूदियों के दूसरे देशों में भी यहूदी लोग कोई समय रस्म के तौर पर शिवलिंग के आकार के पत्थर को छूते हैं। इसके अतिरिक्त प्राचीन और प्रसिद्ध देश मिस्र के फोनेशिया नगर, ईरान के शहर सीरिया, यूनान, स्पेन, जर्मनी, स्केडेनेविया, अमरीका, मैक्सिको में पीरूहयती द्वीप, सुमात्रा और जावा द्वीप आदि-आदि के विभिन्न भागों में भी शिव की यह स्थूल यादगार यत्र-तत्र विद्यमान है। यही नहीं बल्कि स्काटलैंड के प्रमुख शहर ग्लासगो में, तुर्किस्तान में, ताशकन्द में, वेस्ट-इंडीज के गियाना, लंका, स्याम, मारीशस और मैडागास्कर इत्यादि देशों में भी शिवलिंग का पूजन होता है।

अनेक धर्मों में मतभेद बढ़ जाने के कारण, अन्य देशों में शिवलिंग की लोकप्रियता पहले के समान न भी रही हो परंतु भारत में, जहाँ से इसकी पूजा आरंभ होकर बाहर गयी आज भी लोगों को यह अतिप्रिय है। श्री रामचंद्रजी को रामेश्वर में, श्रीकृष्ण जी को गोपेश्वर में तथा अन्य देवताओं को भी, उन सबका परमपूज्य ईश्वर-शिव को दर्शाने के लिए शिवलिंग की पूजा करते दिखाया है। अत: निस्संदेह स्वीकार करना पड़ेगा कि सारी सृष्टि की आत्माएं चाहे वे किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय की हों, का एक मात्र परमप्रिय परमपिता परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु शिव ही है।

शिव के विषय में भ्रांतियां:

वर्तमान समय में यद्यपि भारत में शिवलिंग की पूजा तो काफी व्यापक स्तर पर होती है फिर भी शिव के बारे में ऐसी बहुत

सी कपोल कल्पित कथायें प्रचलित हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि लोग अपने पूज्य परमात्मा शिव के विषय में भी कुछ नहीं जानते हैं। ये कथाएं अतिशयोक्ति, मिलावट तथा मनगढ़न्त वृत्तान्तों से भरपूर ही नहीं बल्कि ऐसी हैं जिनसे शिव पर मिथ्या दोष आरोपित होता है। इनमें शिव का पार्वती पर मोहित होना, दक्ष प्रजापिता का चन्द्रमा के साथ अपनी 27 कन्याओं का विवाह करना तथा बाद में उसे श्राप देना इत्यादि कहानियां, निरा गप्प नहीं तो और क्या हैं? परमपिता शिव और उनकी रचना-ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के विषय में अज्ञान होने के ही कारण लोग मतभेद में पड़कर इनके विषय में काम-वासना से भरपूर कलंक लगाते हैं और कभी विष्णु को परमात्मा सिद्ध करने में देवताओं और असुरों में युद्ध इत्यादि की दन्तकथाएं प्रचलित कर देते हैं। दूसरी एक और ध्यान देने योग्य बात है कि अज्ञान के कारण ही भक्त लोग शिव और शंकर को एक ही सत्ता समझते आये हैं। (शिव एवं शंकर में भेद क्या है? यह आगे स्पष्ट किया गया है) बल्कि तमोप्रधान बुद्धि होने के कारण कई तो शंकर को एक व्यक्ति समान मानकर शिव को शंकर का लिंग समझ पूजते आये हैं। खेद है भारत के लोगों की ऐसी तुच्छ अथवा भ्रष्ट-बुद्धि पर।

परमात्मा का कर्त्तव्य एवं त्रिदेव की रचना:

कर्त्तव्य से ही किसी की महिमा अथवा महानता प्रकट होती है। परमपिता परमात्मा शिव सारी सृष्टि का पिता होने के कारण उसका दिव्य एवं कल्याणकारी कर्त्तव्य भी समस्त विश्व के लिये होता है। साधारणतया किसी से यह प्रश्न पूछा जाय तो वह कहता है कि परमात्मा की शक्ति से ही सब कुछ होता है और बिना उसके हुक्म के एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। यह थोड़ा गम्भीरता पूर्वक विवेक से सोचने की आवश्यकता है कि संसार में तो अच्छे-बुरे दोनों ही प्रकार के कर्म होते हैं। बुरे कर्मों का फल दु:खदायी होता है तो क्या परमात्मा भी बुरे कर्म कराते है जिससे कि अन्य आत्माओं को दु:ख प्राप्त हो। मान लीजिए, कोई आवेश में आकर किसी अन्य व्यक्ति को छुरा छोंप देता है तो क्या इस हिंसक कर्म का कर्त्ता भी परमात्मा को माना जाय? परमात्मा तो सदा सुख कर्त्ता – दु:ख हर्त्ता है तो उसके कर्मों में भी कभी दु:ख विद्यमान नहीं हो सकता। यदि पाप-कर्म अथवा पुण्य कर्म परमात्मा ही कराता है तो इसका बुरा वा अच्छा फल आत्माएं क्यों भोगती हैं? जबकि विधान के अनुसार कहा गया है कि जो करेगा सो पावेगा। अत: यह स्मरण रहे कि प्रत्येक आत्मा कर्म करने में पूर्णतया स्वतंत्र है। परमात्मा के हाथ में वह कोई कठपुतली की तरह नहीं है। परमात्मा का नाम, रूप और गुण लौकिक मनुष्यों से भिन्न हैं। उसका कर्म भी लौकिक मनुष्यों से भिन्न हैं तो उसका कर्म भी लौकिक न होकर अलौकिक ही होने चाहिएँ। परन्तु बहुत से लोग यह समझते हैं कि संसार में फल, फूल, पौधे आदि सबकी तो उत्पत्ति, पालना और विनाश ईश्वर ही करता है परंतु यह सब तो अनादि प्राकृतिक नियमों के अनुसार होता है। प्राणियों का जन्म लेना, जीना और मरना भी उसके अपने कर्मों पर आधारित होता है।

स्मरण रहे कि इन तीन आकारी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर की अपना-अपना अस्तित्व है और परमात्मा शिव जो इन तीनों का रचयिता हैं, उसकी सत्ता इनसे भिन्न है। प्राय: लोग शिव एवं शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम समझते हैं परन्तु शिव और शंकर वास्तव में एक नहीं हैं। शंकर एक सूक्ष्माकारी रूप वाले देवता हैं परन्तु शिव निराकारी हैं। शिव कल्याणकारी परम पिता परमात्मा का नाम है और शंकर आकारी देवता हैं जो कि तमोगुणी, आसुरी सृष्टि का विनाश करवाने के निमित्त हैं। कई चित्रों में शंकर और पार्वती को शिवलिंग के सम्मुख बैठा दिखाया गया है जिसमें शंकर, शिवलिंग की ओर संकेत करते हुए पार्वती को भी प्रेरित करते हैं कि वह अपनी योग साधना में शिव पर मनन करें। इससे भी शिव एवं शंकर का भेद स्पष्ट प्रतीत हो जाता है। इन दो का नाम मिश्रित हो जाने का कारण एक और भी हो सकता है कि भारत वर्ष

के बहुत से प्रांतों में जैसे सौराष्ट्र, गुजरात आदि में किसी व्यक्ति का नाम लेते समय उसके पिता का नाम भी साथ में मिश्रित रहता है जैसे मोहनदास करमचंद गांधी में उनके पिता का नाम मिश्रित है। इसी पद्धति के अनुसार लोग प्राय: शिव-शंकर का नाम भी इकट्ठा लेते हैं। परंतु कालान्तर में इस बात को बिल्कुल भुला दिया गया कि शिव और शंकर, रचयिता और रचना के रूप में दो अलग-अलग सत्ताएं हैं।

अत: ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों सूक्ष्माकारी (बिना हड्डी मांस के) देवता हैं, जिनको केवल दिव्य-दृष्टि द्वारा ही देखा जा सकता है। परन्तु इनको परमात्मा नहीं कह सकते क्योंकि इनके भी रचयिता परमात्मा शिव ही हैं।

परमात्मा का धाम एवं तीन लोक का स्पष्टीकरण:

परमात्मा को जहां त्रिमूर्ति(तीन देवताओं का रचयिता), त्रिनेत्री (दिव्य बुद्धि रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला), त्रिकाल दर्शी (सृष्टि के आदि,मध्य तथा अन्त, तीनों कालों का ज्ञाता) आदि कहते हैं तो उसे त्रिलोकी नाथ अथवा त्रिभुवनेश्वर भी कहा जाता है। अत: तीन लोकों का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए।

एक तो यह मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम रह रहे हैं, यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों की ही सृष्टि है जिसे कर्म-क्षेत्र भी कहते हैं क्योंकि यहां मनुष्य जैसा कर्म करते हैं वैसा फिर भोगते भी अवश्य हैं।

इस लोक में बसने वालों का हड्डी-मांस आदि का पिण्ड अथवा शरीर होता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अत: इस सृष्टि को विराट नाटकशाला अथवा लीलाधाम, जिसमें कि सूर्य और चांद मानो बड़ी-बड़ी बत्तियां हैं, भी कहा जा सकता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन तथा कर्म तीनों ही हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में हैं। स्थापना, विनाश और पालना आदि परम-आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से सम्बंधित हैं।

सूर्य-चांद से भी पार इस मनुष्य लोक के आकाश तत्व के भी ऊपर एक और अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है जिसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे-लाल प्रकाश में चतुर्भुज विष्णु की पूरी और उसके भी पार महादेव शंकर की पुरी है। इन तीनों देवाताओं की पुरियों को मिलाकर इसे सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह पांच तत्वों से बने हुए नहीं हैं। बल्कि सूक्ष्म, प्रकाश तत्व के हैं। इन देवताओं को अथवा इनके लोकों को, इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता, बल्कि दिव्य-चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प तथा गति तो है परन्तु वहां वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। यहां मुख द्वारा बोलते तो हैं परन्तु मनुष्य के लोक में बोलने पर जो ध्वनि होती है, वह वहाँ अनुपस्थित होती है। इस सूक्ष्म लोक में मृत्यु, दु:ख या विकारों का नाम निशान नहीं होता। धर्मराजपुरी भी इसी सूक्ष्मलोक में ही है।

देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महातत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पांच प्राकृतिक तत्वों क्रमश: पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु रूप त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी अन्य धर्मों की आत्माएं अपने आत्माओं की अव्यक्त वंशावली में निवास करती हैं। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है।

अत: वहां न सुख है, न दु:ख है बल्कि इन दोनों से एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म-बंधन

वाला शरीर नहीं होता है। यहां आत्मा भी अकर्त्ता, अभोक्ता और निर्लिप्त अवस्था में होती है।

यहां हर एक का मन लीन, शान्त अथवा बीज-रूपी अवस्था में होता है। सृष्टि-लीला की अनादि तथा निश्चित योजना के अनुसार जब किसी आत्मा का सृष्टि रूपी रंग-मंच पर पार्ट होता है तभी वह नीचे साकार लोक में आकर शरीर रूपी वस्त्र धारण कर अपना अभिनय करने के लिए उपस्थित होती है।

प्राय: दु:ख अशान्ति के समय जब लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं तो हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं। परम आत्मा का निवास स्थान होने के कारण यह परमधाम नाम से भी प्रसिद्ध है।

यहां पर एक भ्रान्ति को दूर करने की आवश्यकता है कि प्राय: लोग ब्रह्म-तत्व को ही परमात्मा मान बैठे हैं जो वास्तव में परमात्मा अथवा आत्माओं का रहने का स्थान है। जिस प्रकार प्रत्येक चमकने वाली वस्तु सोना नहीं हो सकती, उसी प्रकार प्रकाशवान् ब्रह्म-ज्योति जो कि अविनाशी तत्व है उसे ज्योति स्वरूप चैतन्य परमात्मा मानना बहुत बड़ा भ्रम है। अत: ब्रह्म को परमात्मा मानना अथवा स्वयं को ''अहम् ब्रह्मास्मि'' समझना या ''सर्वखलुविदम् ब्रह्म'' तत्व से योग लगाने वाली आत्माएं शक्तिशाली अथवा पावन नहीं बन सकती क्योंकि तत्व से आत्माओं को शक्ति नहीं प्राप्त हो सकती है।

शिवरात्रि अथवा परमात्मा का दिव्य-जन्म: शिव अर्थात् कल्याणकारी नाम परमात्मा का इसलिये है क्योंकि यह धर्मग्लानि के समय, जब सभी मनुष्यात्माएं माया (पांच विकारों) के कारण दु:खी, अशान्त, पतित एवं भ्रष्टाचारी बन जाती हैं तो उनको पुन: पावन एवं कल्यणकारी बनाने का दिव्य कर्त्तव्य करते हैं। अत: परमात्मा को भी कर्म-भ्रष्ट संसार का उद्धार करने के लिये ब्रह्मलोक से नीचे उतर कर किसी साकार शरीर का आधार लेना पड़ता है। वह किसी साधारण वृद्ध तन में प्रवेश करते हैं। परमात्मा शिव के इस दिव्य अवतरण अथवा अलौकिक जन्म की पुनीत स्मृति में ही शिवरात्रि अर्थात शिवजयंती का त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार भारत में ही विशेष धूम-धाम से मनाया जाता है। क्योंकि भारत भूमि ही परमात्मा के अलौकिक जन्म तथा कर्म की पावन भूमि है।

शिवरात्रि का त्योहार फाल्गुन मास, जो चैत्रवदी वर्ष का अन्तिम मास होता है, में आता है। उस समय कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी का पूर्ण अन्धकार होता है। उसके पश्चात् शुक्ल पक्ष का आरंभ होता है और कुछ ही दिनों बाद नया संवत् प्रारंभ होता है। अत: रात्रि की तरह फाल्गुन की कृष्ण चतुर्दशी भी आत्माओं के अज्ञान-अंधकार, अथवा आसुरी लक्षणों के पराकाष्ठा के अन्तिम चरण की द्योतक है। इसके पश्चात् आत्माओं का शुक्ल पक्ष अथवा नया कल्प प्रारंभ होता है अर्थात् अज्ञान और दु:ख के समय का अन्त होकर पवित्र तथा सुख का समय शुरू होता है।

परमात्मा शिव अवतरित होकर अपने ज्ञान, योग तथा पवित्रता की शक्ति द्वारा आत्माओं में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करते हैं। इसी महत्त्व के फलस्वरूप भक्त लोग शिवरात्रि पर जागरण करते हैं। शिव और शंकर में अन्तर न समझने के कारण, शिव को मस्त योगी समझ स्वयं को भी कृत्रिम रूप से मस्त बनाने के लिए भांग, चरस, गांजा आदि का इस दिन खूब सेवन करते हैं। बेचारों को यह तो ज्ञान नहीं कि सच्ची मस्ती तो परमात्मा शिव से प्राप्त ज्ञानामृत प्राप्त करने से ही चढ़ती है। उस दिन प्राय: लोग उपवास अथवा व्रत करते हैं। इस वर्ष परमपिता परमात्मा शिव को इस सृष्टि पर अवतरित हुए 67 वर्ष हो चुके हैं। अत: इस वर्ष हम 67वीं महाशिवरात्रि का पर्व मना रहे हैं। आप सभी मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमन्त्रण है कि शिवरात्रि के यथार्थ रहस्य को समझकर विकारों का सच्चा व्रत रखें एवं शीघ्र ही आने वाली नई सतयुगी दुनिया में देवपद को प्राप्त करें। ओम् शान्ति।